शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' प्रणीत 'प्रियप्रवास' की राधा

स्वाति मिश्रा (शोधार्थी)
श्री मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आधुनिक काल के अग्रणी कवि श्री हरिऔध ने अपनी रचनाओं में प्राचीन एवं नवीन में समन्वय स्थापित किया है। अपने महाकाव्य 'प्रियप्रवास' में कवि ने राधा को केवल कृष्ण की हृदयेश्वरी, रस मंडल की सखी, परम सुन्दरी, अल्हड़, प्रेम विह्वल आदि रूपों का ही चित्रण नहीं किया है, बल्कि श्रीकृष्ण जैसे राष्ट्र नेता की विवेकिनी, सहचारी के रूप में चित्रित किया है। हिंदी के आधुनिककालीन साहित्य में राधा का प्राचीन रूप परिवर्तित हो गया है । वह सेवा भाव का प्रतीक बन गयी है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रियप्रवास की राधा की इन्ही विशेषताओं को प्रकाश में लाने का प्रयास किया जा रहा है।

व्यक्तित्व और कृतित्व

ब्रज भाषा में काव्य रचना त्याग कर खड़ी बोली में काव्य रचना करने के लिए जो अनेक नवयुवक कवि इस क्षेत्र में आए , उनमें श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' प्रमुख एवं प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। भक्तिकाल के बाद महाकाव्य लेखन की परंपरा समाप्त हो गई थी , उसे पुनर्जीवित करने का श्रेय हरिऔध जी को ही जाता है। वे आधुनिक हिन्दी कविता के अग्रदूत थे। श्री अध्योध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के पूर्वज मूलतः दिल्ली के रहने निवासी थे। बाद में वे आजमगढ़ के निजामाबाद में आकर बस गए। उस समय सिक्ख संप्रदाय का प्रचार-प्रसार जोर-षोर से हो रहा था। उससे प्रभावित होकर हरिऔध जी के एक पूर्वज पण्डित गुरुदयाल उपाध्याय ने सिक्ख संपद्राय में दीक्षा ग्रहण कर ली। परिणामतः इस परिवार के सदस्यों के नाम के साथ सिंह शब्द का प्रयोग होने लगा। कविवर हरिऔध के पिता का नाम भोलासिंह और माता का नाम रुक्मिणी देवी था। हरिऔध के चाचा ब्रह्मसिंह उच्च कोटि के विद्वान, ज्योतिष विद्या के प्रवीण और प्रसिद्ध थे। अयोध्यासिंह उपाध्याय का जन्म निजामाबाद में 15 अप्रैल 1865 ई. को हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था चाचा ने ही की। सन् 1879 में प्रथम श्रेणी में वर्नाक्युलर मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की। इससे इन्हें छात्रवृत्ति मिलने लगी। हरिऔध जी उच्च शिक्षा के लिए काशी के क्वींस कॉलेज में दाखिल हुए। लेकिन अस्वस्थ रहने से कोई परीक्षा नहीं दे पाए और वापस घर आ गए। यहां रहकर उन्होंने संस्कृत, गुरुमुखी, फारसी, बंगला आदि भाषाओं का अध्ययन किया। सत्रह साल की उम्र में इनका विवाह अनंत कुमारी से हुआ। आर्थिक समस्या हल करने के लिए पहले इन्होंने हिंदी मिडिल स्कूल में अध्यापन कार्य किया। जब इससे भी बात नहीं बनी, तब कानून की डिग्री लेने के बाद स्थायी कानून गो बने। सरकारी पद पर कार्य करते हुए भी हरिऔध जी की काव्य साधना चलती रही। साहित्य सेवाओं से प्रभावित होकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें अपना सभापति

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निर्वाचित किया। 'काषी नागरी प्रचारिणी सभा' की ओर से इन्हें अभिनंदन ग्रंथ समर्पित किया गया। साहित्य सम्मेलन ने इन्हें साहित्य वाचस्पति और भारत धर्म मंडल ने 'साहित्य रत्न की उपाधियों से विभूषित किया। इनकी प्रमुख कृति 'प्रिय प्रवास' पर इन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' देकर सम्मानित किया गया। 6 मार्च सन् 1947 को हरिऔध का महाप्रस्थान हुआ।

श्री ह रिऔध जी ने गद्यकार के रूप में दो रचनाएं लिखीं : अधखिला फूल , ठेठ हिन्दी का ठाठ। काव्य शास्त्री के रूप में हरिऔध जी ने 'रसकलस' नाम की रचना लिखी। उनका योगदान कवि के रूप में अधिक है। उनके प्रमुख कृतित्व को निम्नांकित ढंग से रेखांकित किया जा सकता है :

श्रीकृष्ण शतक , प्रेमाम्बु वारिधि , प्रेमाम्बु प्रवाह , प्रेमाम्बु प्रस्रण , प्रेम-प्रपंच, प्रेम पुष्पोहार , प्रिय प्रवास, ऋतु मुकुर, पद्य प्रमोद, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, पद्य प्रसून, बोलचाल, फूल-पत्ते, कल्पलता, पारिजात, ग्राम गीत , बाल कवितावली , वैदेही वनवास, हरिऔध सतसई, मर्म स्पर्श।

कवि-रूप में हरिऔध जी की देन अधिक है। इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति 'प्रिय प्रवास' है। इसे आधुनिक काल और खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त है। रूप-रचना , काव्य, कथानक, अभिव्यंजना शैली और भाषा आदि की दृष्टि से यह रचना मौलिक एवं महत्वपूर्ण है।

प्रिय प्रवास की राधा

'प्रिय प्रवास' की कथावस्तु पौराणिक है। यह श्रीकृष्ण की मथुरा यात्रा पर आधारित है। इसका कथानक श्रीमदभागवद् पुराण है। कवि ने पौराणिक कथा के माध्यम से सामयिक प्रवृत्तियों को प्रतिफलित करने का प्रयास इस महाकाव्य में किया है। सत्रह सर्गों में वर्णित वात्सल्य-विरह , श्रृंगार-विरह, मित्र-विरह का मार्मिक चित्रण इस रचना में किया गया है।

चौथे सर्ग में राधा का वर्णन है। राधा वृषभानु की पुत्री है। दोनों परिवारों में परस्पर प्रेम है। राध का सौंदर्य अत्यंत हृदयग्राही है। राधा कृष्ण पर अनुरक्त है। हर समय उसी के संग रहती है और जब श्रीकृष्ण प्रयाण का प्रसंग सुनाती है तो शोक सागर में डूब जाती है। जिस प्रकार हिमपात से विकसित कलियां झड़ जाती हैं :

विकसिता कलिका हिमपात से।तुरत ज्यों बनती अति म्लान है।।
सुन प्रसंग मुकुंद-प्रवास का। मलिन त्यों वृषभानुसुता हुई।।1

कृष्ण जब वृंदावन छोड़कर मथुरा के लिए प्रस्थान कर देते हैं , उसके पश्चात राधा की दशा इस प्रकार होती है।

रो रो चिंता रहित दिन को राधिका थी बिताती।
आंखों को थी सजल-रखती उन्मना थीं दिखती।।
शोभा वाले जलद-वपु की हो रही चातकी।
उत्कंठा थी परम बला वेदना वर्द्धिता थी।।2

इस पद में राधा रो रोकर कृष्ण के वियोग में दिन बिताती है। वह सदा आंखों में आंसू भरे रखने वाली चातकी के समान है।

बैठी खिन्न यक दिवस वे गेह में थीं अकेली।
आके आंसू दृग-युगल, में थे धरा को भिगोते।।
आई धीरे इस सदन में पुष्प सुगंध को ले।
प्रातः वाली सुपवन इसी कल वातावरण से।।

जब राधा एक दिन अकेले बैठी हुई थी , तब प्रातःकालीन हवा का झोंका उसके समीप आया। अतः राधा इस प्रकार कृष्ण को संदे शा भेजने के लिए पवन से कहती है कि हे पवन! तुम कृष्ण के पास जाओ और उन्हें बताओ की मैं तुम्हारे दुःख में एक पीले पत्ते के समान सूख गई हूं। हे

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पवन! तू जाकर कृष्ण के चरणों में एक पुष्प अर्पित करना और उनके स्पर्श का पुष्प मुझे लाकर देना।

कृष्ण परम प्रेमी हैं , मथुरा में पेचीदे कार्यों में संलग्न हो जाने के कारण वे ब्रजवासियों के पास उद्धव को भेजना नहीं भूलते। वे ब्रजभूमि में आने के लिए उत्सुक हैं। राधा , यशोदा और नंद स्वयं सभी की स्मृति उन्हें व्याकुल करती रहती है। मथुरा में भी उन्होंने कंस आदि के वध द्वारा लोकहित ही किया है। वे उद्ध व को ब्रज भेजकर ब्रजवासियों को धैर्य बंधाने का प्रयास करते हैं। कृष्ण उद्धव से कहते हैं - "माता का सवि शेष तोष करना और वृद्ध गोपेश का। वे उद्धव को ब्रज की मर्यादाओं से अवगत करके ब्रज भेजते हैं। अतः वे मर्यादावादी हैं और सभी को मर्यादानुसार चलने की सीख देते हैं। कृष्ण धीरोदात्त गुणों से युक्त हैं। कृष्ण के गुणों ने उन्हें ऐसा बनाया है। वे राजपुत्र होते हुए भी निरभिमान होकर यही उपदेश करते हैं :

बढ़ो करो वीर स्वजाति का भला , अपार दोनों विद्य लाभ है हमें।
किया स्वकर्तव्य उबारा जो लिया , सुकीर्ति पायी यदि भस्म हो गए।।

उद्धव ब्रज आकर श्रीकृष्ण का संदेश राधा को देते हैं और कहते हैं कि -

'प्राणधारे परम सरले प्रेम की मूर्ति राधे।
निर्माता ने पृथक तुमसे यों किया क्यों मुझे है।।
प्यारी आषा प्रिय-मिलन की नित्य है दूर होती।
कैसे ऐसे कठिन पथ का पान्थ मैं हो रहा हूं।।
हे प्यारी और मधुर सुख औ भोग की लालसायें।
कांते, लिप्सा जगत-हित की ओर भी है मनोज्ञा।।
इच्छा आत्मा परम-हित की मुक्ति की उत्तमा है।
बांछा होती विषद उससे आत्म उत्सर्ग की है।।
जो आता है निरत तप में मुक्ति की कामना से।
आत्मार्थी है, न कह सकते हैं उसे आत्म त्यागी।।
जी से प्यारा जगत हित औ लोक-सेवा जिसे है।
प्यारी सच्चा अवनि तल में आत्मत्यागी वही है।।
जो पृथ्वी के विपुल सुख की माधुरी है विपाशा।
प्राणी सेवा जनित सुख की प्राप्ति तो जन्हुजा है।।
जो आद्या है नखत द्युति व्याप जाती उरों में।
तो होती है लसित उसमें कौमुदी-सी द्वितीया।।
भोगों में भी विविध कितनी रंजिनी-शक्तियां हैं।
वे तो भी हैं जगत-हित से मुग्धकारी न होते।।
सच्चा यों है कलुष उनमें है बड़े क्लांतिकारी।
पाई जाती लसित इसमें शांति लोकोत्तरा है।।3

श्रीकृष्ण ने उद्धव द्वारा राधा को यह संदेश दिया है। प्यारी राधा भोग विलास में लिप्त रहने की कामना न करो। अपने जी से प्यारा इस जगत को मानो। इस जीवन का सच्चा सुख दूसरों की सेवा करना है।

कृष्ण के उद्धव द्वारा कहे गए इन वचनों को सुनकर राधा यह कहती है :

"जो इच्छा है परम प्रिय की जो अनुज्ञा हुई है।
मैं प्राणों के उछत उसको भूल कैसे सकूंगी।।
यों भी मेरे परम व्रत के तुल्य बातें यही थीं।
हो जाऊंगी अधिक अब मैं दत्तचित्त इन्हीं में।।4
"मानूंगी अधिक तुझमें मोह मात्रा अभी है।
होती हूं प्रणय-रंग से रंजिता नित्य तो भी।।
ऐसी हूंगी निरत अब मैं पूत-कारयविली में।
मेरे जी में प्रणय जिससे पूर्णतः व्याप्त होवें।।
मैंने प्रायः निकटप्रिय के बैठते भक्ति सीखी।
जिज्ञासा से विविध उसका मर्म है जान पाना।।
चेष्टा ऐसी सतत अपनी बुद्धि द्वारा करूंगी।
भूलू चूंकू न इस व्रत की पूत कारयविली में।।
जा के मेरी विनय इतनी नम्रता से सुनावें।
मेरे प्यारे कुंवर-वर को आप सौजन्य द्वारा।।
मैं ऐसी हूं न निज-दुख से कष्टिता शोक मग्ना।

हा! जैसी हूं व्यथित ब्रज के वासियों के दुखों से।।5

"गोपी गोपों विकल ब्रज की बालिका बालकों को।
आ के पुष्पानुपम मुखड़ा प्राण प्यारे दिखावें।।
बाधा को न यदि प्रिय के चारू कर्तव्य में हों।
तो वे आ जनक जननी की दषा देख जाएं।।
मैं मानूंगी अधिक बढ़ता लोभ है लाभ ही से।
तो भी होगा सु-फल कितनी भ्रांतियां दूर होंगी।।
जो उत्कंठा-जनित दुःख दाहते हैं उरों को।
सद्वाक्यों से प्रबल उनका वेग भी शांत होगा।।6

"सत्कर्मी है परम-शुचि हैं आप अधोसुखी हैं।
अच्छा होगा सनय प्रभु से आप चाहें यही जो।।
आज्ञा भूलूं न प्रियतम की विष्व के काम आऊं।
मेरा कौमार-व्रत भव में पूर्णता प्राप्त होवे।।7

राधा ने उद्धव द्वारा कहे गए वचनों को माना और कहा कि जैसे मेरे प्रिय की आज्ञा है , मैं उसका पालन करूंगी और जनसेवा में ही अपना जीवन व्यतीत करूंगी। राधा कहती है कि मैंने अपने प्रिय के पास बैठकर भक्ति सीखी है। मैं ऐसी चेष्टा करूंगी कि हमे शा दीन-दुखियों की सेवा करूंगी। उद्धव जी आप जाकर श्रीकृष्ण जी से कहना कि राधा तो जैसी हे , वह ठीक हे , परंतु वे अपना पुष्परूपी मुखड़ा ब्रज के गोप , गोपी और अपने जनक जननी को जरूर दिखाएं। श्रीकृष्ण के यहां आने से दुखियों का थोड़ा दुःख दूर होगा और उन्हें अच्छा भी लगेगा। हे उद्धव! आप श्रीकृष्ण जी से कहना कि मैं उनकी आज्ञा का पालन करूंगी और मैं विश्व के काम आऊंगी। इस महाकाव्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि नायिका राधा प्रारंभ में साधारण प्रेमिका के रूप में वर्णित है। उसमें साधारण स्त्री के गुण हैं। परंतु कृति के कृष्ण साधारण से साधारण कार्यों में लोक को प्रसन्नचित्त रखना चाहते हैं। कहीं वे कलह होने पर वे वहां शांति स्थापित कर प्रेम का संचार करते हैं। दीनहीनों व संतानहीनों को संतोष देने में प्रयासरत हैं। इस प्रकार वे हमेषा लोक को आनंदित बनाते रहते हैं।

उनका स्वभाव मृदुल है। सच्चे महात्मा के समस्त गुणों से विभूषित कृष्ण को उनकी लोक हितैषी प्रवृत्ति ही उन्हें महात्मा के पद पर प्रतिष्ठित करती है। बारह वर्ष की अवस्था से ही वे गोप समुदाय के हित की साधना कर रहे हैं। लोक हित ही उनका कार्य है। वे मानव जाति के उद्धार के लिए जन्मे हैं। ब्रज में उनके द्वारा किए गए विविध लोक-रंजक कार्यों ने उन्हें जन-जन का प्रिय बना रखा है। यहां कृष्ण प्रियदर्षी , साहसी, शूरवीर, लोकप्रिय, लोक हितैषी , कर्तव्य परायण, स्वाभिमानी एवं दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। उनका लोक रक्षक रूप प्रमुखता से दिखाया गया है। वे अपने असीम साहस तथा शौर्य से अनेक विकराल और मायावी राक्षसों का वध करते हैं। उनके गुणों का उत्तरोत्तर विकास होता है। ऐसे आदर्श चरित्र के लोक नायक कृष्ण राधा को लोक सेवा का ही संदेश भेजते हैं। उनकी लोक हितैषणा की चरम अभिव्यक्ति इस संदे श में देखने को मिलती है। कृष्ण कहते हैं कि हे प्रिय! ज्गत में सुख भोग की लिप्साएं और बहुत-सी मनोहारी चीजें हैं, किंतु इच्छा का उत्सर्ग ही उत्तम गुण है। सेवा भावना की उत्कृष्टता का संदे श पाकर राधा को प्रकाष की उपलब्धि होती है , राधा कृष्ण प्रेमांध गोपियों को ज्ञान देती है कि प्रियतम सर्वव्यापी है। कण-कण में व्याप्त है। अंत में राधा समस्त सृष्टि में कृष्ण रूप देखती है और लोक सेवा में रत होकर आत्मोत्सर्ग कर देती है। अंत में राधा पूर्णतः भिन्न दिखाई देती है। वह प्रिय को समस्त सृष्टि में देखती हुई लोक सेवा में तत्पर हो जाती है। महाकाव्य में राधा के तीन रूप दिखाई देते हैं। प्रणयिनी, विरहणी तथा लोक सेविका। कवि ने

राधा के चरित्र में भी मानवीय कमजोरियां , त्रुटियां, सहनषीलता, मोह, त्याग, उत्सर्ग एवं बलिदान का सुंदर सामंजस्य स्थापित किया है।

निष्कर्ष

'प्रिय प्रवास' की रचना के समय की सामयिक प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब इस रचना में देखा जा सकता है। हरिऔध जी ने अपने महाकाव्य में कृष्ण अवतार को एवं राधा को लोक नायकों के रूप मे वर्णित किया है। राधा में भाव व बुद्धि का उचित समन्वय है। वह धर्म परायण , आदर्शों की रक्षा करने वाली तथा समाज सेविका है। कृष्ण द्वारा भेजे गए लोकसेवा के संदेश को पाकर वह नारी सुलभ भावना से ऊपर उठकर समस्त लोक में ईश्वर की छटा देखती है। लोक सेवा में ही सच्ची भक्ति स्वीकारती है। माता-पिता एवं बड़ों के प्रति आदर एवं कृष्ण के दिए संदे श को वह नवधा भक्ति के समान मानती है। श्याम के लोक आराधना विषयक संदेश को अपने मन बैठा कर वह सुजनों , खलों, दीनों और अनाथों को समान सेवा भाव, शांति और संतोष प्रदान करती है। वह प्राणी मात्र यहां तक कि चींटी एवं कीड़ों का भी भला करने में संलग्न है। अतः यदि इस कृति में लोकरंजन के प्रबल प्रणेता पुरुष श्याम हैं तो नारी है राधा। वह दृढ़ व्रत धारिणी है। नायक श्रीकृष्ण की सफल नायिका है। लोक साधना हेतु अवतरित कृष्ण के वियोग में सुख का अनुभव करने वाली समाज सेविका है। समाज सेवा के लिए उसका कौमार व्रत का संकल्प उसके चरित्र की सबसे बड़ी सफलता है। राधा के लोक सेविका स्वरूप में उस युग के आर्य समाज , ब्रह्म समाज आदि समाज सुधारक आंदोलनों के प्रभाव की छटा है। इन आंदोलनों से प्रेरित अनेक नारियां रूढ़िवादिता त्यागकर दे श की सेवा और लोक आराधना में प्रवृत्त हुई। सत्रहवें सर्ग की राधा ऐसी ही नारियों के स्वरूपों का प्रतिबिंब है। इन आंदोलनों द्वारा देश को नव जाग्रति मिली। तभी नव जाग्रति के भाव तथा राधा द्वारा दी गई लोक सेवा कवि के विचारों के माध्यम से इस महाकाव्य में प्रकट हुई है।

कृति के राधा-कृष्ण के भावों, विचारों एवं कार्यों में तत्कालीन दे शानुरागी आंदोलनकारियों , समाज सुधारकों के भावों , विचारों तथा कार्य प्रणालियों का यथा तथ्य चित्रण है। 'प्रिय प्रवास' के राधा और कृष्ण युगीन परिस्थितियों के अनुरूप आदर्श नायक-नायिका हैं , जो लोकहित के लिए प्रयत्नशील हैं। अतः रचना के कृष्ण-राधा का यह आदर्श युगीन परिस्थितियों से पूर्णतः प्रभावित है। रचना एक अनोखा व मौलिक प्रबंध है। इसमें राधा-कृष्ण के चरित्र भी अनूठे हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 आधार ग्रंथ : प्रियप्रवास , अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध

2 हरिऔध की काव्य शैली, विमल आहूजा, रामलालपुरी, संचालक, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, प्रथम संस्करण

3 आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों में विप्रलंभ श्रृंगार , (आलोचना), मधु धवन

4 हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि , डॉ.सुरेश अग्रवाल, अषोक प्रकाशन, नई दिल्ली

आधार ग्रंथ : 'प्रिय प्रवास', अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

1 प्रिय प्रवास, हरिऔध, पृष्ठ 111

2 प्रिय प्रवास, हरिऔध, पृष्ठ 63

3 प्रिय प्रवास, हरिऔध, पृष्ठ 265

4 प्रिय प्रवास, हरिऔध, पृष्ठ 278

5 प्रिय प्रवास, हरिऔध, पृष्ठ 278

6 प्रिय प्रवास, हरिऔध, पृष्ठ 279

7 प्रिय प्रवास, हरिऔध, पृष्ठ 279